International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 173-174

असग़र वजाहत के कहानियों में चित्रित ग्रामीण चेतना

मुहम्मद शाहीद
चेलपुर, मण्डल हुजराबाद, जिला–करीमनगर, तेलंगाना, भारत

प्रस्तावना

असग़र वजाहत एक ख्यातिलब्ध रचनाकार हैं। वे एक साथ अनेक विधाओं में लिखने वाले सृजनात्मक लेखक हैं। असग़र वजाहत ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की बदलती हुई हर मनोवृति को बड़ी सूक्ष्मता और गहराई के साथ चित्रित किया है। उन्होने लगभग 1965 से कहानी लिखना शुरू किया जो आज तक अनवरत जारी है। समाज को परखने की सूक्ष्म दृष्टि उन्हे जीवन के संघर्ष भरे कड़वे अनुभवों से मिली है। उनकी कहानियों में एक ओर अभिजात्य वर्ग है तो दूसरी ओर खड़ा आम आदमी।

आजादी के बाद यदि देखा जाय तो गाँवों की जीवन–स्थिति में बहुत कुछ बदलाव आया है। राजनीति के झटके गाँवों को भी लगने लगे हैं। मंदिर–मस्जिद के झगड़े वहाँ भी पैदा होने लगे हैं। स्त्री भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है। तात्पर्य यह कि गाँवों की जिंदगी में भी, धीमी गति से ही सही लगातार बदलाव आ रहा है। फिर भी यह कह सकते हैं कि विदेशी शासन और जमींदारी प्रथा का तो अंत हो गया, पर किसानों का सामंती और महाजनी शोषण थोड़े बदले–रूप में बना रहा। पुराने जमींदार, भूमिपति और महाजन वेश बदलकर राजनीति में शामिल हो गए और संसद, विधान सभाओं और सार्वजनिक संस्थाओं में प्रवेश कर आम जनता का पूर्ववत् शोषण करते रहे। मैदानी हिस्सों में बाढ़ और सूखा का प्रकोप पहले जैसा ही बना रहा। वर्तमान युग में राजनीतिक चुनावों में राजनीतिक चेतना उतनी नहीं जगी जितनी जातिवाद, संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद की भावना पनपी। आज गाँवों का परंपरागत ढाँचा बिखर गया है। प्रेम सद्भाव और भाईचारे के मूल्य नष्ट हो गए, पुराने संबंधों में दरार पड़ गई है। इस यथार्थ की विश्वसनीय और कलात्मक अभिव्यक्ति असग़र वजाहत की कहानियों में दिखाई देती है। ग्रामीण मानस में पैदे हुए मूल्य संकट का, जो लोकतंत्र और पूँजीवाद के घिनौने समीकरण तथा सामंतवादी और पूँजीवादी मूल्य–संस्कृति की देन है इन सब बातों का असग़र वजाहत की कहानियों में गहरी संवेदना के साथ चित्रण हुआ है। ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों का यथार्थपरक चित्र असग़र वजाहत की कहानियों में प्राप्त होता है।

'दिल्ली पहुँचना है' कहानी असग़र वजाहत की ग्रामीण चेतना से संपन्न बहुत ही अच्छी कहानी है। बिपिन बिहारी शर्मा के नेतृत्व में पूर्वी चंपारन के एक छोटे से गाँव मदनपुरा के लोगों को हाथ में लाल झंडा लेकर दिल्ली पहुँचना है। ऐसे अवसर ग्रामीण लोगों में एक उत्साह भर देते है। पास में पैसा नहीं फिर भी उत्साह है। पूरा गाँव झुंड के रूप में रात दो बजे स्टेशन पहुँच जाता है। सभी लोग ट्रेन का इन्तजार कर रहे है। कहानीकार ने इनके उत्साह को यूँ बयान किया है–''ये सब एक ही तरह के लोग थे। मैली, फटी, ऊँची धोतियाँ या लुंगिया और ऊंटगी, बेतुकी, सिलवटें पड़ी कमीजे या कपड़े की सिली बनियानें पहने। नंगेसिर, नंगे पैर, सिर पर छोटे–छोटे बाल। एक हाँथ में पोटली और दूसरे हाथ में लाल झंडा।''[1] ये ग्रामीण तो ये भी नहीं जानते कि दिल्ली पहुँचकर इन्हें करना क्या है। बस जाना है। इसलिए ''पोटली में बँधे मकई के सत्तु, चिउड़ा और भूजा इसी हिसाब से रखे गये थे।''[2] स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए विभिन्न आंदोलनों एवं सत्याग्रहों ने ग्रामीण समाज में एक नवीन क्रांति का आह्वान किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में किसान मजदूर सभी ने इसी प्रकार की फटेहाली में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। देश की स्वतंत्रता के लिए समय–समय पर चलाए गए असहयोग आंदोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, भारत छोड़ो आंदोलन आदि को सफल बनाने में ऐसे ही कृषक मजदूरों ने सहयोग दिया था। इस प्रकार के प्रसंगों द्वारा कहानीकार ग्रामीणों की जागरूकता का संकेत करता है।

ग्रामीण जीवन सरल और सादा होता है। यहाँ का समाज हर बात के लिए एक–दूसरे से जुड़ा हुआ होता है। सामूहिकता की भावना होती है। प्रकृति के साथ रहते हैं। प्रकृति इनकी लय में बसी होती है। ग्रामीणों की इस लय को असग़र वजाहत बखूबी पहचानते हैं। असग़र वजाहत एक अच्छे चित्रकार–पेंटर भी है इसलिए उनकी कहानियों में प्राकृतिक सुशमा दिखाई दे जाती है। जैसे रात के तीन बजे का यह दृश्य देखा जा सकता है–''इमली,, आम और नीम के बड़े–बड़े पेड़ों के नीचे दुबका गाँव सो रहा था। इन पेड़ों की अंधेरी परछाइयाँ इधर–उधर खपरैल के घरों, गलियारों, कच्ची दीवारों पर पड़ रही थी। बड़े बरगद के पेड़ के पत्ते हवा में खड़खड़ाते तो सन्नाटा कुछ क्षण के लिए टूटता और फिर पूरे गाँव को छापकर बैठ जाता। ऊपर आसमान सफेद रूई जैसे बादल उत्तर की ओर भागे चले जा रहे थे। चाँद पीला पड़ चुका था और जैसे सहमकर एक कोने में चला गया था।''[3] यह चित्र देखकर असग़र वजाहत की ग्रामीण चेतना का परिचय बखूबी हो जाता है।

ग्रामीणों के विकास का बहुत बड़ा आधार है–शिक्षा। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी शिक्षा का स्तर काफी दयनीय है। सरकार इस क्षेत्र में अपना काम करके खुद ही अपनी पीठ ठोक लेती है। कागज पर सब कुछ हो जाता है पर यथार्थ इससे कोसों दूर है। असग़र वजाहत की कहानी 'पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब' गाँवों के सरकारी स्कूलों और उसकी शिक्षा–प्रणाली की पूरी पोल खोल देने वाली कहानी है। हमारे देश में सबसे ज्यादा असमानता शिक्षा में देखने को मिलती है और खास रूप से प्राइमरी शिक्षा को लेकर। गाँवों में जो सरकारी प्राइमरी स्कूल है अब वह सिर्फ गरीब बच्चों के लिए ही रह गया है जहाँ ''बच्चे रेगुलर स्कूल नहीं आते....लंच टाइम में आते हैं। स्कूल की तरफ से लंच मिलता है, वह खाते हैं और चले जाते हैं।....कभी उनके परिवारवालों को इलाके में मजदूरी नहीं मिलती तो कहीं और चले जाते हैं।''[4] और दूसरी तरफ गाँव में जो थोड़ा भी अमीर है वह अपने बच्चों को प्राइवेट के किसी अंग्रेजी माध्यम स्कूलो में डाल देता है। स्कूली शिक्षा की इस असमानता और उसके अंतर्विरोध को असगर वजाहत की यह कहानी रेखांकित

करती है। विषय विशेषज्ञ बनकर विद्वान बड़ी आसानी से ग्रामीण शिक्षा पर एक अच्छा–सा व्याख्यान दे देता है लेकिन वह हकीकत से कितना दूरा होता है यह डॉ. सक्सेना के बयानों से साबित होता है। डॉ. सक्सेना इन स्कूलों के अध्यापकों को अच्छे शिक्षण पर भाषण देने आए हैं। लेकिन ये अध्यापक इन सरकारी स्कूलों से जुड़ी छोटी–छोटी बुनियादी समस्याओं को लेकर जब डॉ. सक्सेना से बहस करने लग जाते हैं तो उनके होश उड जाते हैं। और खास बात यह है कि विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. सक्सेना के पास इनका जवाब भी नहीं रह जाता। जैसे एक अध्यापक पूछता है कि ''सर, हमारे स्कूल में सात सौ लड़के हैं। ग्यारह अध्यापक हैं। एक क्लास रूम में तीनों क्लासे बैठती है। एक अध्यापक एक साथ तीन कक्षाओं को पढ़ाता हैं....।''[5] और फिर एक दूसरा अध्यापक एक सवाल और जोड़ देता है कि ''सर अब बात निकल आई तो कहने दीजिए सर... हमारे स्कूलों में हमारे अधिकारियों के बच्चे क्यों नहीं पढ़ते? मंत्रियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में क्यों नहीं जाते।''[6] सारे अध्यापक इस बात को लेकर एकमत हैं कि यह सब एक बहुत बड़े भारी शडयंत्र का हिस्सा है। सरकारी की योजनाओं में कभी मूल बात पर ध्यान ही नहीं रहा। यही नहीं अध्यापक डॉ. सक्सेना के सामने स्लेबस बनाने वाले विषय विशेषज्ञों को भी कुछ बुनियादों बातों को लेकर कटघरे में खड़ाकर देते हैं। जैसे एक अध्यापिका कहती है, ''सर, आपने वह किताब देखी है जो पहले दर्जे में पढ़ाते हैं'' इसमें ''पहला पाठ हे रसोई घर...पहला वाक्य है 'फल खा' जिन बच्चों को हम पढ़ाते हैं वे जानते ही नहीं कि फल क्या होता है?... सर, देखिए यह रसोई घर का चित्र बना है....हमारे बच्चों ने तो गैस सिलेण्डर, फ्रिज, बर्तन रखने की अलमारियाँ देखी तक नहीं होती... उनकी समाझ में यह सब क्या आएगा।''[7] यह सही है कि नई किताबें बनाते समय विषेशज्ञ समुदाय ऐसे अध्यापकों की सलाह लेना भी जरूरी नहीं समझता जिन समस्याओं को लेकर ये अध्यापक नित्य जूझते है। कुल मिलाकर देखा जाय तो आज ग्रामीण शिक्षा की बदहाली से कोई मुख मोड़ नहीं सकता। असगर वजाहत की ऐसी कहानियों की खासियत है कि वे जितना इन उपरोक्त समस्याओं को सामने लाती हैं उतनी ही इन अध्यापकों की अकमर्णयता पर भी प्रहार करती हैं।

असग़र वजाहत एक ऐसे रचनाकार है जो आज भी अपनी जमीन और माटी से जुड़े हुए है। उन्होंने जीवन में अनेक उतार–चढ़ावों को देखा और भोगा है। ग्रामीण संवेदना इसीलिए उनकी कहानियों में साफ दिखायी देती है। अकाल और बाढ़ की विभीशिका कैसी होती है इसकी मारक संवेदना असग़र वजाहत के पास है। वे जानते हैं कि अकाल हो या बाढ़ 'मुखमंत्री सुखमंत्री रहते हैं। बिहार की एक छोटी नदी कोशी किस तरह तांडव करती है। और यह नदी हर साल कितनी जान–माल को नुकसान पहुँचाती है। यह पूरे देश को पता है। इस विभीशिका का यह एक मात्र चित्र है–''बाढ़ का पानी उतर नहीं रहा। बाढ़–पीड़ित बाढ़ में फँसे पड़े है। लगता है सब कुछ किसी छपे हुए चित्र में बदल गया है। लोग अपने–अपने बच्चों को कंधों पर उठाए, सामान लादे, भूखे, परेशान, बेधर–बार खड़े हैं। चारो तरफ बाढ़ का पानी है जो उन्हे खा जाने के लिए तैयार है।''[8] इस कहानी के माध्यम से सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हों, किस तरह ग्रामीण जनता की इस दुःख भरी हलात का नाजायज फायदा उठाते हैं, असगर वजाहत ने बड़े ही असरदार ढंग से यहाँ चित्रित किया है। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के बीच जो संवाद होता है वह इस बात को रेखांकित करने के लिए काफी है कि सरकार का ग्रामीण असहाय पीड़ित जनता से कोई सरोकार नहीं है।

> ''मुख्यमंत्री कहते हैं, 'बाढ़ रोकना केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है।''
> प्रधानमंत्री बोले, 'नदी आपके राज में है कि हमारे केन्द्र में है?''
> मुख्यमंत्री ने कहा, ''संसद तो वही है....।''

प्रधानमंत्री, ''संसद बनाने वाले जानते थे, बार–बार आती रहेगी बाढ़ और आप केन्द्र को परेशान करते रहेंगे।.....''

मुख्यमंत्री, ''आप इसे परेशानी कहते हैं। हम तो कहते हैं साल–भर बाढ़ रहे। जनता की सेवा करने का मौका मिलता रहे। मुख्यमंत्री कोष में पैसा आता रहे।''[9]

राजनेता ऐसे हालत के पैदा हो जाने पर कितने असंवेदनशील हो सकते हैं यह मात्र इस कहानी का एक उदाहरण भर है। ग्रामीण जनता से ऐसे तथाकथित नेताओं का सरोकार केवल चुनाव के समय ही हो पाता है।

संदर्भ

1. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), दिल्ली पहुँचना है, असग़र वजाहत, पृ.सं. 101
2. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), दिल्ली पहुँचना है, असग़र जाहत, पृ.सं. 102
3. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), दिल्ली पहुँचना है, असगर वजाहत, पृ.सं. 101
4. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब, असगर वजाहत, पृ.सं. 327
5. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब, असग़र वजाहत, पृ.सं. 329
6. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब, असग़र वजाहत, पृ.सं. 329
7. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), पढ़ोगे लिखोगे तो होगे खराब, असग़र वजाहत, पृ.सं. 328
8. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), मुखमंत्री और डेमोक्रोसिया, असग़र वजाहत, पृ.सं. 349
9. पिचासी कहानियाँ, (कहानी संग्रह), मुखमंत्री और डेमोक्रोसिया, असग़र वजाहत, पृ.सं. 349